मेरा मित्र डुगाँन्ग

चंचल सिंघा रॉय

मेरा मित्र डुगाँन्ग

मेरा मित्र डुगाँन्ग

चंचल सिंघा रॉय

मूलप्रति बंगाली से अग्रेंजी में अनुवादन

सुमिता सेनगुप्ता

मेरा मित्र डुगाँन्ग

(एक लड़के और एक लुप्तप्राय समुद्री जीव के बीच दोस्ती की कहानी)

प्रकाशक
चंचल सिंघा रॉय

मूलप्रति बंगाली से अग्रेंजी में अनुवादन– सुमिता सेनगुप्ता

हिन्दी में अनुवादन– सुरेन्द्र सिंग रावत, प्राची हाटकर, अंकित पाचा, नितिनभूषण

चित्रण–
बिदिशा चक्रबर्ती

© चंचल सिंघा रॉय सर्वाधिकार सुरक्षित

२०१६ में प्रकाशित

फ्लॅट नं.– ६, ब्लॉक–ए,
लोकेनाथ हॉअसिंग कॉलोनी,
पोस्ट ऑफिस– डोलीगंज,
पोर्टब्लेयर, दक्षिण अंडमान, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह,
ईमेल– chanchal2b@gmail.com

ISBN - ६७८.६३.५२५४.६५६.७

टाइपसेटिंग, लेआउट और डिजाइन
एक्सप्रेशन्स प्रिंट और ग्राफिक्स प्रा. लिमिटेड
१७४, सुभाष नगर, गुप्ता जनरल स्टोर के बगल में
देहरादून–२४८००२, उत्तराखण्ड
ईमेलः xpressionsddn@gmail.com
मो. नं. – ६२१६५५२५६३
फोन न.– ६१ १३५ २६४५८७३

यह पुस्तक, व्यापार के माध्यम से या अन्यथा, प्रकाशक की पूर्व लिखित सहमति के बिना किसी भी प्रकार के बाध्यकारी या कवर के बिना, जिसमें प्रकाशित किया गया है और बिना किसी शर्त के और बिना किसी सीमा के, प्रस्तुत किया गया है, किराए पर लिया गया है, या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जाएगा ऊपर आरक्षित कॉपीराइट के तहत अधिकार, इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा पुनः उत्पन्न, संग्रहीत या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में पेश नहीं किया जा सकता है, या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, या अन्यथा रिकॉर्डिंग) प्रेषित किया जा सकता है, बिना पूर्व लिखित के कॉपीराइट स्वामी और इस पुस्तक के प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

प्रस्तावना

पोत परिवहन के आंरभिक वर्षो से ही विश्वभर के नाविक, वास्तविक जलपरियों (mermaid) को देखने का दावा करते आ रहे हैं। यहांतक कि प्राचीन नाविक क्रिस्टोफर कोलंम्बस ने १४६२ में उत्तरी अमेरिका के तटवर्ती भागों में जलपरियों को देखने का उल्लेख किया था। संभवतः पौरिाणिक जलपरियां, मैनेटीज या डुगाँन्ग की प्रजातियां रही हों, जिनके बारे में आज हम अच्छी तरह से जानते हैं।

डुगाँन्ग या समुद्री गाय, समुद्री शाकभक्षी स्तनपाइयों की एकमात्र प्रजाति रह गई है जो ऑस्ट्रेलिया के तटवर्ती भागों, दक्षिण–पूर्वी एशिया, भारतीय उपमहाद्वीप, अरब की खाड़ी, अफ्रिका के पश्चिमी तट तथा भारतीय तटीय जलक्षेत्रों में पाई जाती हैं। ये समुद्र जल के भीतर विशेष प्रकार के पुष्पित पादपों का भक्षण करती हैं, जिन्हें समुद्री घास कहते हैं। ये शांत, सुरक्षित उथले पानी में रहती हैं और २-४ मिनटों में ताजी हवा में सांस लेने के लिए सतह पर आती हैं। भारत में डुगाँन्ग तमिलनाडु, गुजरात तथा अंडमान निकोबार प्रायः द्वीप समूहों में पाई जाती हैं। इनकी आबादी इन तीन राज्यों में काफी कम है और खंडित वासस्थलों में हैं, जिसके कारण इनके विलुप्त होने का खतरा बना हुआ है। इनकी आबादी के निरंतर कम होने के मुख्य कारण : समुद्री घासयुक्त वासस्थलों का अपक्षय और निम्नीकरण, मछली पकड़ने के जालों में फंस जाना, देशज उपयोग, शिकार तथा तटवर्ती प्रदूषण है।

पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष २०१५ में भारतीय वन्यजीव संस्थान को राष्ट्रिय प्रतिपुरक वनीकरण निधी प्रबधन और नियोजन प्राधिकरण के आर्थिक सहयोग से डुगाँन्ग की आबादी का समुत्थान करने और समुद्री घास वासस्थलों का पुनरूद्धार करने के हेतु, प्रजाति समुत्थान योजना तैयार करने और क्रियान्वित करने का कार्य सौंपा है। भारतीय वन्यजीव संस्थान ने अन्य हितधारकों की साझीदारी से समुद्री परिस्थितियों में डुँगांन्ग की दीर्घकालिक जीवनक्षमता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक आधारिक उपाय प्रारंभ किये हैं। हमारा उद्देश्य राष्ट्रीय वन विभागों, भारतीय तटरक्षक दलों, भारतीय नौसेना, राज्य मत्स्यपालन विभागों, राज्य पर्यटन विभागों तथा मछुवारों के समुदायों का सहयोग लेकर आगामी दो दशकों में, भारत में डुगाँन्ग की आबादी और वासस्थलों को पुनःस्थापित करना है।

डुगाँन्ग के संरक्षण हेतु मुख्य हितधारकों में पाठशाला के बच्चे भी शामिल हैं। उन्हें इस संरक्षण कार्यक्रम में सीधे तौर पर सक्रिय करने हेतु हमने विशेष सहभागिता डुगाँन्ग छात्रवृत्ति कार्यक्रम प्रारंभ किया है, जिससे मछुवारा समुदाय के कई पाठशाला के बच्चों को लाभ हो रहा है। इस छात्रवृत्ति कार्यक्रम से मछुआरा समुदाय से हमारा सीधा सम्पर्क हुआ है और समुद्री पारिपद्धति में डुगाँन्ग की भूमिका के बारे में समग्र जागरूकता उत्पन्न हुई है।

इस मनोरंजक किताब को श्री चंचल सिंघा रॉय ने लिखा है जो अंडमान–निकोबार द्वीप के पाठशाला के अध्यापक हैं। इसमें अंडमान द्वीप समूह में डुगाँन्ग और लिंगाराजू नामक बच्चे के बीच दोस्ती की दिलचस्प कहानी है। इस पुस्तक का अनुवाद छः भाषाओं में किया गया है और इसे डुगाँन्ग उपलब्धतावाले तीन राज्यों के प्रत्येक पाठशाला की पुस्तकालयों में वितरित किया जायेगा। हमें आशय है कि इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय तटों के इस शांत और विशाल समुद्री जीव को बच्चों के दिल और दिमाग में स्थान मिलेगा।

डॉ. के. सिवाकुमार
वैज्ञानिक
भारतीय वन्यजीव संस्थान

मेरे नील और हॅवलॉक
द्वीप के छात्रों
को समर्पित

लगातार बहती हवा और भारी बारिश के बाद, आज का ये दिन शांतिपूर्ण और शांत है। बादलरहित, चमकीले आकाश के नीचे समुद्र नीले रंग का जीवंत छाया जैसा प्रतीत हो रहा है। आज रविवार, छुट्टी का दिन है। हर रविवार की तरह, लिंगाराजु लक्ष्मणपुर के जंगलो में उन बकरियों को वापस लेने के लिए आए है जिन्हे विचरण के लिए छोड़ दिया जाता था। अभी कुछ और समय के लिए शाम नहीं ढलने वाली थी। जंगल पार करते हुए लिंगाराजु रेतीले समुद्रतट पर पहुँच जाता है और चारों ओर देखते हुए रेत पर बैठ जाता है। उसकी गहरी आँखें किसी को खोज रही हैं या कुछ और रहस्य है? वह उत्साहित होकर, इधर–उधर देख रहा है, लेकिन वो वह नहीं देख पा रहा है जिसे वो ढूंढ रहा है।

लिंगाराजु का युवा मन सवालों से भरा है। क्या आंधी और तेज बारिश ने उसे कहीं और पहुँचा दिया है? नहीं, यह नहीं हो सकता! इस मौन वाद–विवाद में मग्न, उसने यह ध्यान नहीं दिया की शाम ढल चुकी है, और नीले समुद्र ने एक काले हरे रंग का रूप ले लिया है।

अपने व्युत्पन से बाहर निकलकर, वह कूदता है, रेत को अपने पैंट से हटाता है, और वापस जंगल में भाग जाता है। आदत से मजबूर, बकरियों ने जंगल में संकीर्ण रास्ते का अनुसरण करते हुए पक्की सड़क तक अपना रास्ता बना लिया था। वे वहां एक समूह में इंतजार कर रही थी।

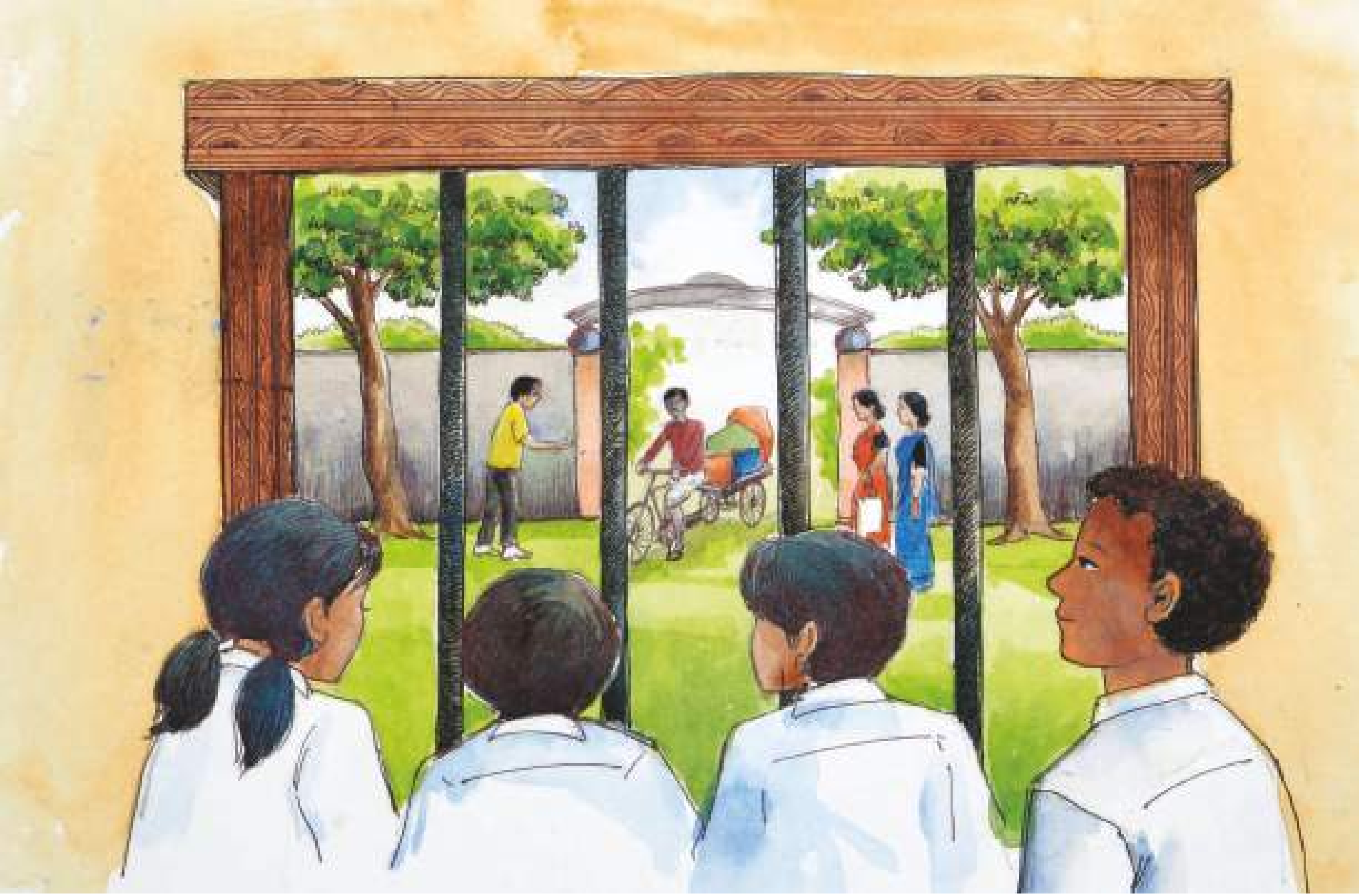

क्या वह वास्तव में चला गया है? पर कहा गया ? इन विचार मे लिंगाराजु डूब गया। क्या मै फिर कभी इससे दोबारा मिल पाऊँगा ?

स्याह (जेट्टी) से दूसरी अवधि की घंटी भोंपू (साइरेन) के साथ बजती है जो की जेट्टी के जहाज को बांधने का संकेत देती है। लिंगा की कक्षा से पाठशाला के गेट को सीधे देखा जा सकता था। हालांकी कक्षा की

दूसरी अवधि शुरू हो गई थी, फिर भी लिंगा, कृष्णाराव और जोगा ध्यान नहीं दे रहे थे। बार–बार, उनकी निगाहें मुख्य द्वार पर स्थानांतरित हो रही थी।

नाव कुछ देर पहले आई होगी। फिर गैरसरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) के लोग कहां हैं?

बच्चे इसकी उम्मीद कर रहे थे क्योंकी एक दिन पहले ही प्राध्यापक ने इस बात की घोषणा की थी।

''वे क्यों नही आए?'' जोगा फुसफुसाया। ''सीधे बैठो'', फुसफुसाते हुए लिंगा ने कहा, ''शिक्षिका आपको देख रही है''।

अचानक उन्हें द्वार खुलने की तेज आवाज सुनाई दी और तुरंत ही सभी की नजरें ब्लॅकबोर्ड से हट गई! एक वॅन–रिक्शा और एक जीप से कुछ लोग आये थे।

उनके शिक्षिका ने उन्हें डाटा था, क्या उनका ध्यान कक्षा से भटक गया था। त्सूनामी के बाद से कई गैरसरकारी संगठन के लोग नील द्वीप में आते रहते थे और बच्चे उनकी गतिविधियों से काफी परिचित हो गए थे। बच्चे भी गैरसरकारी संगठन के द्वारा किये गए गतिविधियों को करना पसंद करते थे। इसका मतलब था की कक्षा से बाहर जाना, प्रकृति और उनके आस पास के परिवेश को एक अलग नजरिये से देखना और उनके बारे में सीखना।

थोड़ी देर बाद, तीन लोग पाठशाला में दाखिल हुए, जो की सामान से लदे हुए थे।

दोपहर के भोजन के समय तक हर कोई ये जान चूका था की, गैर सरकारी संगठन से लोग आए थे, और कक्षा ६ से ८ के छात्रों को मैदान में एकत्रित होने के लिए कहा गया था। मैदान में एक तरफ पाठशाला की इमारत थी, और दूसरी तरफ नीम और आम के पेड़ थे। सुबह समुद्र की ओर से बहती ठंडी हवा और नीम के पेड़ों की छांव ने एक अनोखा माहौल बनाया, जिसकी सभी छात्रों ने सराहना की।

''समुद्री जानवरों की सुरक्षा और संरक्षणपर जागरूकता कार्यक्रम'' से संबंधित एक ध्वज (बैनर) दो पेड़ों

से बांध कर लटका दिया गया था। लिंगाराजु, अपने दोस्त कृष्णाराव, दिनेश, जोगाराव, झकारिया, विजय और रमेश के साथ पहली पंक्ति में बैठ गए। बाकि अन्य– मीना, बिकाश, लक्ष्मी, अमित, अरूप, राजीव और गणेश दूसरी पंक्ति में बैठे थे।

गैरसरकारी संगठन से जुड़े राजन महोदय ने विमला, हेमा महोदया और खुद का परिचय दिया और अगले चार दिनों में किये जानेवाले गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। गतिविधि के दौरान दर्शनीय स्थलों की यात्रा, विचार–विमर्श और छात्रों को अपने विचारों को बोलने और साझा (सहभाजन) करने का भी मौका मिलेगा।

यह सुनकर, छात्रों और शिक्षकों ने ताली बजाना शुरू कर दिया, और हर कोई अपनी उत्सुकता को रोक पाने में असक्षम था। तालियों की आवाज दोपहर के वैराग्य के चारों ओर फैल गई।

हेमा महोदया ने कहा ''हम एक अलग अंदाज में अपना परिचय देंगे। जैसे की उदाहरण के लिए, मेरा नाम हेमा है, लेकिन जब मैं अपना परिचय दूंगी, तो मैं अपने नाम के पहले समुद्री जीव का नाम जोड़ूंगी। तो मेरा नाम ''डॉल्फिन हेमा'' होगा!

बच्चे जोर से हंस पड़े। यह अपने आप को परिचित करने का एक मजेदार और दिलचस्प तरीके की तरह लग रहा था।

जोगा सबसे पहले उठकर खड़ा हुआ। ''महोदया, मेरा नाम सुरमई जोगा है।'' सभी ने हसकर ताली बजाई। एक–एक करके, प्रत्येक छात्र ने इसी अंदाज में अपना परिचय दिया।

लिंगा ने सोचा क्या मुझे अपने मित्र का नाम जोड़ना चाहिए? जिसे मैंने स्नोर्कलिंग के दौरान देखा और स्पर्श किया था! वह नाम बताने वाला था, लेकीन ये सोच के रुक गया की, क्या होगा अगर वे इसे किसी और नाम से जानते हैं? क्या हो अगर...?

हेमा महोदया की आवाज से उनके विचार टूट गए। ''तुम चुप क्यों बैठे हो? आओ, हमें अपना नाम

बताओ'' उन्होंने कहा।

''टयुना लिंगा'', उसने जल्दी ही जवाब दिया।

''बहुत अच्छा, राजन और हेमा दोनों ने कहा। अंडमान द्वीप समूह के पास के पानी में बहुत से टयुना मिलते हैं''।

परिचय समाप्त होने के बाद, विमला महोदया ने रंगीन तस्वीरों का उपयोग करके छात्रों को समुद्री जीवों के बारे में बताना शुरू किया।

उन्होंने उनके आवास, भोजन सेवनशैली, शरीर के उपयोगी अंग और प्रजनन प्रक्रिया के बारे में बताया।

वहा जमीन पर, पेड़ों की छाया के नीचे बैठे, लिंगा, जोगा और कृष्णा बिना किसी पाठ्यपुस्तक के ही समुद्री जीवों की दुनिया में पहुंच गए थे!

हेमा महोदया ने कहा, ''यह ज्ञान, परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने के उद्देश्य से नही है बल्की यह सिर्फ आपकी जानकारी के लिए और फिर दूसरों के साथ साझा (सहभाजन) करने के लिए है। यह इसलिए भी है की, आप महासागर और उनमे रहने वाले सभी जीवों की रक्षा कर सकें।

''अब हम आज का यह कार्यक्रम यही समाप्त करते हैं, और हम कल सुबह नौ बजे मिलेंगे, समुद्र से संबंधित वृत्तचित्र देखेंगे, और निश्चित रूप से ही आप हमें अपने अनुभवों के बारे में बताएंगे। हम आपसे बहुत कुछ सीखेंगे!''।

लिंगा और उसके दोस्त वास्तव में घर नहीं जाना चाहते थे। वे समुद्र की कहानियों को सुनते घंटों बैठे रह सकते थे।

लिंगा ने अपने मित्र कृष्णा के मनोरंजन के लिए अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान आरक्षित कर लिया।

हर दिन की तरह, लिंगा पाठशाला से घर पहुंच के अपना दोपहर का भोजन करने के बाद बकरियों को चराने के लिए बाहर ले गया।

उस दिन पाठशाला में बहुत मजा आया, लेकिन लिंगा को अपने दिल में एक अजीबसी उदासी महसूस हुई। जब उसने अपना परिचय दिया, वह अपने दोस्त का नाम नहीं दे पाया था।

नील द्वीप का पश्चिमी भाग विशाल, घने जंगल में आच्छादित है, और इसमें प्राचीन सफेद रेत के समुद्र

तट, रेत के टीले और समतल भूमि है। यह नील द्वीप का पहला गांव है, और यहां पहली शरणार्थी बस्ती बसने के कारण इसे नंबर एक के नाम से जाना जाता है। अन्य गाँवों को भी बस्ती बसने के आधार पर क्रमांकित किया गया है।

जैसे ही लिंगा लक्ष्मणपुर के जंगल में घुसा, बकरियां चारा चरने के लिए हरी घास की तलाश में दूर चली गईं। लिंगा रेतीले समुद्र तट पर बैठ गया, और बकरियों के जाने की दिशा का अवलोकन करने लगा।

लिंगा का मन मायूस और अशांत था। उसने लंबे समय से अपने दोस्त को नहीं देखा था। वह रेत पर लेट गया और लगातार आसमान की ओर देखने लगा। समुद्र, तालाब की तरह शांत था, जहां ना कोई ऊंची लहरें थी, ना ही कोई अशांती थी। समुद्र कांच की तरह स्पष्ट और पारदर्शी था। ठंडी हवा के झोके ने लिंगा को कंपा दिया।

लिंगा का जन्म तेलुगु परिवार में होने के बावजूद भी वह स्पष्ट और त्रुटिरहित बंगाली बोलता हैं। लगभग २६ साल पहले, लिंगा के दादा, माता– पिता, और चाचा आंध्रप्रदेश में श्रीकाकुलम जिले के अपने गाँव, कोट्टुरू से चले गए थे। वे मद्रास (अब चेन्नई) में एक जहाज पर सवार होकर पोर्ट ब्लेयर पहुँचे। वहां से वे नील द्वीप आए।

लिंगा के परिवार के पास टिन, लकड़ी और नारियल के पत्तों से बना घर साथ ही जमीन का एक छोटासा हिस्सा है। उनकी गायों और बकरियों को रखने के लिए एक ओसारा (झोंपड़ा) है। उनके पास कुछ नारियल के पेड़ भी हैं। लिंगा भाई–बहनों में सबसे बडा है, हेमावती और भाग्यवती उनकी छोटी बहनें है।

लिंगा के पिता पोर्ट ब्लेयर से आनेवाली नौकाओं से अलग–अलग सामान इकट्टा करके, उन्हें वॅन रिक्शा पर लादकर विभिन्न दुकानों में ले जाते हैं। वहा से लौटने के बाद वह वापस लौटने वाली नौकाओं पर सब्जियों को लादने में मदद करते है। अपने खाली समय में, वह अन्य जमींदारों के खेत में मजदूरी का

काम करते है। लिंगा की माँ घर के सारे काम करने के बाद, लिंगा के पिता के साथ खेतों में मजदूरी के काम में उनकी मदद करती है। वह बकरी और गाय के दूध को बेचने के लिए बाहर जाती है, और बाजार के दिनों में, सब्जियों को लादने में भी मदद करती है। दिसंबर और जनवरी के महीनों के दौरान दिन बहुत छोटे होते हैं। दोपहर होने होने तक सूरज की रोशनी बहुत तेजी से कम हो जाती है, और लक्ष्मणपुर समुद्रीतट से उत्तरी खाड़ी के प्रकाश घर से आनेवाली रोशनी को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लिंगा को दूर से आती रोशनी देखना बहुत पसंद था।

अपने मन के भावनाओं के बीच, लिंगा ने अचानक शांत समुद्र से छप छप की आवाज सुनी।

एक जानी पहचानी छप छप की आवाज! उसी क्षण में, उसने अपनी चप्पल को बहार फेकते हुए समुद्र में गोता लगाने वो समुद्र की तरफ चला गया।

आखिरकार उत्साहीत लिंगा ने अपने दोस्त को देखा। खुशी से भरपूर लिंगा का दोस्त उसके पास जाता है और उसे भी अपने पास आने का इजाजत देता है।

''तुम इतने दिन से कहां थे? क्या तुम जानते हो की मैं तुम्हे कितनी दूर तक तलाश किया है !''

मैं तुम्हारे लिए कितना चिंतित था? मैं हर शाम तुम्हारा इंतजार करता था।" लिंगा ने उन सभी सवालों के जवाब मांगे जो वह पूछने का इंतजार कर रही था।

जब वह सांस लेने के लिए ऊपर आया, तो लिंगा ने देखा कि शाम ढल चुकी थी और उसे याद आया की जंगल में चरने वाली बकरियों को लेकर उसे घर जाना चाहिए!

हालाकी लिंगा अपने दोस्त के साथ ज्यादा रहता चाहता था, उसके साथ समुद्र मे बाते करना और खेलना चाहता था, लेकिन लिंगा जानता था की उसे अभी घर लौटना चाहिए।

लिंगा ने अपने दोस्त को अलविदा बोला, लिंगा तैरते हुए किनारे पर लौट आया, अभी भी उसके दोस्त की आवाज लिंगा के कानों में गूंज रही थी।

असहाय महसूस करते हुए, लिंगा अपने घर की ओर रवाना हो गया।

जंगल और सड़क से कच्चा रास्ता पार करते समय, लिंगा ने देखा कि उसकी बकरियाँ एक साथ झुण्ड में खड़ी है। ये देखते ही लिंगा की चिंता तुरंत खत्म हो गई।

बकरियों के साथ घर लौटते हुए लिंगा ने अपने दोस्त के बारे में सोच रहा था।

नील द्वीप के स्थानीय निवासी उसके दोस्त को ''जल सूअर'' कहते है। क्या उसका दोस्त वास्तव में एक सूअर की तरह दिखता है? या शायद गाय की तरह? लिंगा को अपने दोस्त को ''जल सूअर'' कहा जाना पसंद नहीं था। उसने अपने मन के अंदर एक क्रोधित उत्तेजना

महसूस की, उसे लग रहा था की उसके दोस्त का एक बेहतर नाम होना चाहिए।

अगली सुबह लिंगा की कक्षा एक अलग अच्छी भावना थी। छात्रों में से कोई भी पाठशाला के काम पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता था, और सभी को गैरसरकारी संगठन के राजन, हेमा और विमला के आने का बेसब्री से इंतजार था।

जैसे ही दूसरी अवधि की घंटी बजी, सभी छात्र सभाभवन में इकट्ठे हो गए। सुबह की शुभकामना देने के बाद, हेमा महोदया ने सभी से समुद्री जीवों से समंबधित जानकारी के बारे में उनसे पूछा।

उन्होंने कहा "नील द्वीप के आसपास आप सभी ने किस प्रकार के जीव देखे हैं? क्या आप इन जीवों से जुड़ी किसी घटना के बारे में जानते हैं? कृपया, शरमाए नहीं, हम यहां आपकी बात सुनने के लिए आए हैं।

फिर कुछ आकर्षक हुआ। छात्र, जो अपने शर्मीले और शांत व्यवहार के लिए जाने जाते थे, सभी ने अपने अनुभव और ज्ञान को सहजता और स्वच्छंदता के व्यक्त साझा करना शुरू कर दिया – चाहे वह जेलीफिश, ऑक्टोपस, मूंगा चट्टान (कोरल), टाइगर झींगा, डॉल्फिन और अन्य मछलियों के बारे में ही हो।

कक्षा ७ के कक्षा अध्यापक समीर महोदय ने, बड़े ही आश्चर्यता के साथ छात्रों के इस बदलाव को महसूस किया। प्रति दिनचर्या के नीरस शिक्षण से अभ्यस्त शिक्षक भी छात्रों की बातों को बड़े ही गौर से सुन रहे थे, और आश्चर्य चकित हो, कर छात्रों के इस बदलाव के बारे में आपस में बातें कर रहे थे।

कृष्णा राव ने अपने मछुवारे पिता के अनुभवों के बारे में बात की, और बताया की कैसे एक बड़ी मछली ने एक बार उसके पिता की डूंगी (नाव) को पलट दिया था। कृष्णा ने उन्हें यह भी बताया की उसकी मां मछलियों को बाजार में बेचने से पहले कैसे उन्हें सुखाती हैं, और अच्छी मछली पकड़ने जाने की उम्मीद में हर दिन सुबह पारिवारिक मंदिर में प्रार्थना करते हैं।

राजन महोदय ने पूछा, ''क्या आप अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के राज्यप्राणी का नाम जानते हैं? आप इसे नील द्वीप के पास पानी में भी पा सकते हैं,'' छात्रों के बीच फुसफुसाहट शुरू हो गयी, सभी उस प्राणी के बारे में अनुमान लगाने की कोशिश कर रहे थे जिनके बारे में राजन महोदय बात कर रहे थे, उनकी चमकती आखों में उनकी जिज्ञासा स्पष्ट थी।

‘‘जब आप वृत्तचित्र देखेंगे, तो आप जानवर को आसानी से पहचान पाएंगे,’’ राजन महोदय ने कहा।

सभी छात्र अंधेरे सभाकक्ष में बैठ गए और सभी की निगाहे चित्रपट (स्क्रीन) पर टीकी हुई थी। उन्होंने पेड़ों से ढका हुआ, नीले समुद्र के बीच में रेत की एक छोटी सी पट्टी और लहरों के साथ नृत्य करते हुए समुद्र में विस्तृत छोटी–छोटी नावों, का छोटासा द्वीप देखा।

‘‘बड़ी मुश्किल से अपनी उत्तेजना को समेटते हुए, उत्साहीत कृष्णा ने कहा, ‘‘देखो रमेश, पानी में कुछ सफेद है!

‘‘हा हा, मैंने भी देखा’’ अपनी जगह पर खड़े रमेश ने कहा। जीव की छवि चित्रपट (स्क्रीनपर) दिखाई पड़ी।

‘‘जल सूअर! हमने कई बार इसे पानी में देखा है। मेरे पिता कहते हैं कि यह एक सुअर की तरह दिखता है! ‘‘छात्रों के बीच एक आवाज सुनाई दी।

‘‘यह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का राज्यप्राणी है’’, हेमा महोदया ने कहा।

उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था की पाठशाला के सभाकक्ष में बैठकर वह अपने दोस्त को देख सकेगा।

‘‘क्या आप इस जीव का नाम जानते हैं?’’ राजन महोदय ने पूछा।

‘‘नहीं, हम नहीं जानते!’’ सभाकक्ष के सभी छात्र एक आवाज में बोले।

”इस जीव की डुगाँन्ग कहा जाता है। ये बड़े स्तनधारी प्राणी हैं, और केवल समुद्री घास खाते हैं। इसका मतलब है की ये शाकाहारी जीव हैं।

मलाया भाषा में डुगाँन्ग को समुद्री महिला भी कहा जाता है। बेशक, उनके कई स्थानीय नाम हैं जैसे समुद्री गाय, जल सूअर और कुछ लोग इन्हे समुंद्री ऊंट भी कहते हैं! ”राजन महोदय ने समझाया।

लिंगा को डुगाँन्ग नाम सबसे ज्यादा पसंद आया। ऐसा ना हो की वो नाम भूल जाए, इसलिए उसने जल्दी से अपनी जेब से कलम निकाली और अपने हाथ पर नाम लिखने।

''डुगाँन्ग, मेरा मित्र डुगाँन्ग'' वह खुद से फुसफुसाया।

वह स्नोर्कल लाने की अनुमति देने के लिए अपने चाचा का बहुत आभार महसूस कर रहा था, क्योंकि वही भाग्यशाली दिन था, जब उसने अपने दोस्त को पहली बार देखा था।

स्क्रीनपर दिखाई दे रहा था की डुगाँन्ग समुद्री तलपर उगने वाली घासपर चर रहा था।

''देखो, डुगाँन्ग गाय की तरह घास खा रहा है, शायद इसीलिए इसे समुद्री गाय का नाम मिला'', लिंगा ने राजीव, नागेश और चिन्ना से धीरे से बोला।

"याद है जब मैंने तुमसे कहा था की डुगाँन्ग एक शाकाहारी प्राणी है जो केवल समुद्री घास खाता है?

इसीलिए वे केवल वहीं पाए जाते हैं जहा समुद्री घास होती है। एक और दिलचस्प बात यह है की डुगाँन्ग खाद्यश्रृंखला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, "राजन महोदय ने कहा।

"समुद्री घास को भोजन बनाने के लिए सूर्य से ऊर्जा मिलती है। समुद्री जीव, जैसे डुगाँन्ग यही समुद्री घास खा कर ऊर्जा प्राप्त करते है''।

''इन जीवों से जो मलत्याग पैदा होता है, पानी में तैरनेवाली छोटी मछलियों द्वारा खाया जाता है, इस प्रकार उन तक ऊर्जा पारित की जाती है''।

राजन महोदय ने कहा '' छोटी मछलियाँ प्रौढ़ मछली के रूप में विकसित हो सकती है, या कभी कभी, बड़ी मछली का खाद्य बन जाती है। मछुवारे, जैसे कृष्णा के पिता इन बड़ी मछलियों को पकड़ते हैं, और हम उन्हें बाजारों से खरीदते हैं। मछलियाँ हमें बहुत से पोषक तत्व प्रदान करते है''।

यह सुनते ही लिंगा का दिल गर्व से फूल गया। उसका दोस्त वास्तव में मनुष्यों और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सहायक है।

विमला महोदया, जिनकी दयालु और ममता प्रकृति जिन्हे बच्चे पसंद करते थे, आगे बढ़ीं। ''परोक्ष रूप से, समुद्री गाय (डुगाँन्ग) छोटी मछलियों के लिए देखभालकर्ता की तरह काम करते है। क्योंकी इससे छोटी मछलियां प्रौढ़ रूप से विकसित हो जाती हैं और बदले में हमें पोषण प्रदान करती हैं। हम कभी भी समुद्री गाय के योगदान को अनदेखा नहीं कर सकते या ना ही भुला सकते हैं''।

''महोदया, क्या समुद्री घास हर जगह उगती है?'' शंकर ने पूछा।

''यह एक अच्छा सवाल है। नहीं, ऐसा नहीं है। यह केवल चौड़े, उथले और संरक्षित समुद्री चट्टानों में बढ़ता है, उदाहरण के लिए तटों के पास, या मैन्ग्रोव क्षेत्रों के पास। डुगाँन्ग बड़े ही आसानी से समुद्र चट्टानों से घास को बाहर निकाल सकता है। हालांकी, यदि पौधे को बाहर निकालना संभव नहीं है, तो वे केवल पत्ते खाते हैं। उनकी नजर कमजोर होने के बावजूद भी, गंध और स्वाद की ज्ञानेंद्री क्षमता बहुत मजबूत होती है। डुगाँन्ग का शरीर बहुत मजबुत होता है, वे खुद का संतुलन बनाने या चराई के दौरान अपने सामने वाले पंख (फिन) का उपयोग करते हैं। ''विमला महोदया ने डुगाँन्ग की तस्वीर दिखाते हुए उत्साहित दर्शकों को समझाया।

''डुगाँन्ग नील द्वीप के पास रहते हैं, लेकिन हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते थे।'' सीमा ने कहा।

''हा, हम सभी बस इतना जानते थे कि उन्हें जल सूअर भी कहा जाता है!'' सुब्बालक्ष्मी ने सहमति दर्शायी।

''अच्छा, डुगाँन्ग के बारे में जानने के लिए बहुत कुछ है, और इसी कारण से हम यहा उपस्थित हैं।

प्राणियों के बारे में अधिक जानने के बाद, आप उन्हें प्यार करना सीखेंगे, और वही प्यार उनके संरक्षण में मदद करेगा, "राजन महोदय ने कहा।

''क्या डुगाँन्ग केवल अंडमान के समुद्र में पाए जाते हैं?'' रमेश से पूछा।

“वे गुजरात के पास कच्छ की खाड़ी, तमिलनाडु में मन्नार की खाड़ी और यहां तक की परिर्शियन की खाड़ी, चीन, जापान और फिलिपींन्स में भी पाए जाते हैं,” राजन महोदय ने कहा।

छात्रों ने चलचित्र को देखना जारी रखा जो एक मादा डुगॉन्ग और उसके शावक को समुंद्री लहरों के साथ तैरते दिखा रही थी।

लिंगा का दिमाग उसके दोस्त डुगॉन्ग, राधानगर के समुद्रीतट, स्ट्रेट द्वीप और लॉन्ग द्वीप से हट गया।

वह अपने दोस्त की पीठ पर बैठ लहरों के साथ इन सभी द्वीपों की यात्रा करने का सपना देखने लगा।

यहां तक की अपने दोस्त कृष्णा द्वारा उपसाने के बाद भी, लिंगा ने अपनी कहानियां उससे साझा करने से इनकार कर दिया। उसे लगा अगर लोग मुझपर हसने लगे तो क्या होगा?

दिन की गतिविधियां समाप्त होने से पहले, छात्रों को एक काम सौपा गया था की वे अपने माता–पिता और दादा दादी से यह पूछे की वे डुगॉन्ग के बारे में क्या जानते हैं और उनके पास साझा करने योग्य कोई दिलचस्प अनुभव है।

शाम होने से पहले, लिंगा हमेशा की तरह बकरियों के साथ घर वापस आया, स्नान करते समय उसने अपने हाथ पर नजर रखा कि कहीं उसका लिखाई हाथ से मिट तो नहीं गया। इसके बाद वह अपनी मां और पास की महिलाओं के साथ परिवार की देवी, “देवी मैकिनी” के मंदिर में गया। वे हर शाम मंदिर में एक दीपक जलाते थे, और उनके पिता और दूसरे लोग मछली पकड़ने जाने से पहले अक्सर रात में देर तक प्रार्थना करते थे। मकरसंक्रांती के त्योहार के लिए उसकी मां अलमेलु द्वारा रसोई में बन रही मिठाइयों की सुगंध के साथ लिंगा पढ़ाई करने के लिए बैठ गया। भले ही उसे अपने परीक्षा की तैयारी करनी थी, लेकिन लिंगा पढ़ाई पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। वो उस दिन के बारे में सोचा रहा था, जब वो पहली बार अपने दोस्त डुगॉन्ग से मिला था।

मछली पकड़ने, खेतों में काम करने और नावों से सामान चढ़ाने और उतारने के अलावा, लिंगा के पिता

लक्ष्मण, पर्यटकों को नागन बिस्वास के कांच के तल से बने हुए नाव में पर्यटकों को कोरल (मूंगा चट्टान) दिखाने के लिए बाहर ले जाते थे। भले ही वो बहुत अच्छी तरह से हिंदी नहीं बोल सकते थे, लेकिन वे ज्यादातर कोरल (मूंगा चट्टान) के नाम जानते थे, और वो कहा मिलते है ये भी पता था। इसी कारण से, श्री बिश्वास हमेशा चाहते हैं की वे पर्यटकों को बाहर ले जाएं। जब वह पहली बार नील द्वीप पर आए थे, तब लक्ष्मण भी गोता लगाकर गोताखोरों के साथ मूंगा चट्टानों के बीच तेज भाले का उपयोग करके मछली पकड़ने जाते थे।

लिंगा जब ६ वीं कक्षा में थे, तब से ही उसने अपने पिता का स्नोर्कल और भाला ले लिया और गोता लगाने चला जाता था। बेशक, जब उसके माता–पिता को ये बात पता चली, वे उससे बहुत नाराज थे, और स्नोर्कल वापस ले

लिया और भाला फेंक दिया। उनकी जानकारी के बिना, लिंगा को भाला मिल गया जिसे उसने गौशाला में छिपा दिया।

लिंगा गोपनीय रूप से समुद्र में गोता लगाकर मूंगा चट्टानो को देखने का आनंद भुला नहीं था। इसलिए जब भी उसके माता–पिता भरतपुर या राधानगर सब्जियाँ लेने जाते, वे चुपचाप स्नोर्कल और भाला लेकर झाड़ियों के तरफ से समुद्र में काफी दूर तक चला जाता था। वह हमेशा अपने माता–पिता के वापस आने से पहले घर लौट आता, भाले और स्नोर्कल को छिपा कर, स्नान करता और एक मासूम की तरह घर पर रहता था।

एक रविवार की दोपहर, लिंगा के माता–पिता और बहन भरतपुर गए थे। मौका पाते ही, लिंगा ने एक हाथ में स्नोर्कल और दूसरे में भाला पकड़ा और नारियल के बाग की तरफ भाग गया। वह जानता था कि यह अवसर फिर नहीं मिलेगा, इसलिए दोपहर तक, वह लक्ष्मणपुर के समुद्रतट पर पहुंच गया। समय बर्बाद किए बिना वह समुद्र में चला गया, स्नोर्कल को रखने से पहले उसे अपने थूक से साफ किया।

तैरते हुए, वह अपने पसंदीदा लाल मूंगे के क्षेत्र में पहुंच गया। प्रायः चट्टान के पीछे से रंगीन मछलियां, उसके चारो ओर तैरती हुई निकली। लिंगा के लिए यह एक पूरी तरह से विभिन्न रंगों की अलग दुनिया का एक अनोखा अनुभव था।

उसने कभी भी जमीन पर ऐसा अनुभव नहीं किया था। वह मछलियों को बिना पलक झपकाये देख रहा था।

कई सवाल उसके दिमाग में घूम में रहे थे... की मूंगा चट्टानें क्या पौधे है या प्राणी? वे कब तक जीवित रहते हैं? क्या वे कुछ खाते भी हैं? उसके पिता ने उसे बताया था कि वे रंगीन पत्थर थे।

लिंगा अपने विचारों से थरथरा गया... वहाँ एक बड़ा भूरा प्राणी उसकी तरफ तैरते आ रहा था। उसने भाला फेंक दिया, डर के मारे उसका शरीर अकड़ गया। ये कौन सा जीव है? क्या वह इसे खा जाएगा?

समुद्रतल की तरफ अपने चेहरे को घुमा कर यह अजीबोगरीब जीव क्या तलाश कर रहा था?

मूंगा चट्टानों से लगाने वाली घाव को नजरअंदाज करते हुए लिंगा, समुद्रतट तक पहुचने के लिए जितने तेजी से हो सके उतनी तेजी से तैर रहा था।

उनकी माँ के आवाज ने लिंगा को वर्तमान में वापस ले आया। मकरसंक्रांती के त्यौहार के लिए उनकी मां द्वारा बनायीं गई मिठाई की सुगंध से उसे बहुत ज्यादा भूख लग जाती है। खाना खाते समय, उसे याद आया की उसे अपने माता–पिता से पूछना था की वे डुँगोंन्ग के बारे में क्या जानते हैं। लिंगा ने अपना भोजन खत्म किया, अपने हाथों को धोया और अपने पिता के पास गया।

''नैना,'' उसने बोला, ''चेन्नई के एक गैर सरकारी संगठन से कुछ महोदया और एक महोदय हमारे पाठशाला में आए थे। उन्होंने हमे डुगाँन्ग पर संबंधित फिल्म दिखाई और इसके बारे में कई बातें बताईं। उन्होंने हमसे हमारे माता–पिता से डुगाँन्ग के बारे में जानकारी पूछने बोला था।''

''मैं जल–सूअर के बारे में क्या बता सकता हूं?'' एकाएक उसके पिता ने कहा।

''उन्हें ऐसा मत कहो। आप उन्हें डुगाँन्ग क्यों नही कह सकते?'' लिंगा ने कहा।

लिंगा के पिता चुप रहे। वह बकरियों को बाकर के पत्ते खिला रहे थे, जिन्हे वे बहुत जल्दी और बड़े ही चाव से खाते है। उन्होंने कहा, ''कुछ साल पहले, ''सर्दियों के समय, डुगाँन्ग का शव समुद्रीतट पर पाया गया था। हो सकता है कि, कुछ शिकारियों ने शिकार के लिए इसके मांस को चारा के रूप में इस्तेमाल करने के लिए इसे काट दिया हो।''अब सो जाओ, काफी देर हो चुकी है। और पाठशाला जाने से पहले गाय को चरागाह में बाँध देना ताकी वह चर सके।"

लिंगा वहां से चला गया। उसने सोचा, क्या शिकारी उसके दोस्त को भी मार देंगे?

सुबह में पाठशाला जाने से पहले, लिंगा ने कृष्णा को उस डुँगोंन्ग के बारे में बताया जिसे उसने देखा था और डर के बावजूद वह किसी तरह सुनिश्चित था की यह एक शांतिपूर्ण प्राणी था।

कृष्णा एक समय के लिए चौंक गया, लेकिन फिर लिंगा ने एक कहानी के बारे में बताया, जो उसके दादा ने उसे बताया था... जलपरी – एक प्राणी जो परियों जैसा दिखता है, लेकिन उसके शरीर का आधा

निचला हिस्सा मछली की तरह था, कुछ हद तक डुगाँन्ग के समान।

''तुमने इसे कब देखा? क्या तुम तैरने गए थे?'' कृष्णा ने पूछा।

''नहीं, मैं अपने चाचा की छोटी डूंगी ले गया था जिसे चलाने के लिए मैं बांस के डंडे का इस्तेमाल किया था।'' लिंगा ने कहा।

''फिर क्या हुआ?'' कृष्णा ने उत्सुकता से पूछा।

''मैं उस जगह पर ऊपर–नीचे गया, जहां मैंने पहली बार इसे देखा था, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। निराश होकर, मैं लौटने वाला ही था की अचानक मेरी डूंगी एक तरफ झुक गई। मैंने दोनों तरफ देखा, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अचानक डूंगी फिर झुक गयी। मैंने किनारे पर झुककर देखा तो एक बडा जानवर डूंगी के चारों ओर घूम रहा था, जो समुद्रतल पर उगनेवाली घास की तलाश कर रहा था। नियमित अंतराल पर,वह पानी से बाहर आ रहा था। मैंने महसूस किया कि वह निश्चित रूप से कोई जलपरी नहीं बल्कि बहुत ही शांतिप्रिय जीव है। उस दिन मैंने सिर्फ उसकी प्रवृति का आकलन किया।''

''मुझे अवश्य कहना चाहिए, तुम बहुत बहादुर हो,'' कृष्णा ने कहा, उसकी आवाज प्रशंसा से भरी है।

''उस दिन, मैंने अपने माता–पिता को कुछ भी नहीं बताया, लेकिन शाम को, मैंने अपने चाचा को बताया। उन्होंने कहा की वह इस प्राणी के बारे में जानते हैं, और इसे कई बार देखा था। मुझे उन पर विश्वास नहीं हुआ और मैंने उनसे कहा की मैं उन्हें उस स्थान पर ले जाऊंगा जहां मैंने डुगाँन्ग को देखा था, '' लिंगा ने कहा क्या आपने? "कृष्णा ने पूछा।

''हाँ। डूंगी में रहते हुए मैंने पानी में हाथ डाला था। थोड़ी देर के लिए कुछ भी नहीं हुआ, और मैं सो गया। अचानक मुझे लगा कि कोई चीज मेरी उंगली को छू रही है। में चौंक कर बैठ गया और पानी में देखा की डुगाँन्ग मेरे बहुत पास था, कई बार सतह के पास आ गया और अपना समय लेते हुए पानी में गोते लगा रहा था।''

क्या आपने उसे छुआ?''

खैर पहले तो मैं फिर से पानी में हाथ डालने को लेकर थोड़ा घबराया हुआ था, लेकिन फिर मैंने किया और डुगाँन्ग मेरे पास आ गया। शायद वह एक दोस्त को नमस्ते कहना चाहता था। मैंने अपने चाचा को नहीं बताया, लेकिन वह अचानक नाव पर चढ़ गया। बेशक, डुगाँन्ग को डर लगा होगा, और वो चला

गया। क्या आप जानते हैं, मैं वास्तव में डुगाँन्ग की कमी महसूस कर रहा था, और सोचता रहा की वो कहा चला गया।

आज कार्यशाला का अंतिम दिन था। डुगाँन्ग के बारे में इतना जानने के दौरान छात्रों को बहुत मजा

आया। आज उन्हें पिछले दिन के सौंपा गया काम से जो कुछ भी सीखा है उसे साझा करना है।

विमला महोदया ने सभी को सुप्रभात की शुभकामनाएं दी, और समूह से कहा कि उन्होंने जो सीखा है उसे साझा करें। तुरंत, एक कोलाहल होने लगा, जिसमें से हर कोई पहेले जाना चाहता था। जब वे शांत हो गए, तब राजन महोदय ने कहा ''मैंने देखा है की पिछले कुछ दिनों में लिंगा बहुत शांत हो गया है, मुझे लगता है की वह आज कुछ साझा करेगा, क्या मैं सही हूँ?''

पहले तो लिंगा को इस तरह से अकेले चुने जाने में थोड़ा अजीब लग रहा था, लेकिन जब उसे अपने दोस्तों के चेहरे देखे, तो वह उत्साहशील हो गया। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद लिंगा ने बात करना शुरू किया।

''जब मैंने अपने पिता से डुगाँन्ग के बारे में पूछा, तो उन्होंने मुझे एक घटना के बारे में बताया। कुछ लालची लोग डुगाँन्ग को पकड़ते हैं और उन्हें क्रूरता से मारते हैं।'' लिंगा की आवाज और चेहरे पर दर्शक दुख को महसूस कर सकते थे।

''कुछ अन्य लोगों की तरह, मेरे पिता ने समुद्रतट पर डुगाँन्ग के शव को देखा था। ऐसा लगता है की लोगों ने जानवर का मांस खाया था, और कुछ ने मछली के लिए डुगाँन्ग के मांस को चारे के तोर पे इस्तेमाल किया है। शिकारियों ने तेल बनाने के लिए भी मांस का उपयोग किया है।'' लिंगा की आवाज भावना के साथ घुट गयी और वह तुरंत धन्यवाद कहने के बाद बैठ जाता है।

स्थिति में डूबने के साथ सभागृह में एक बहरा सन्नाटा है।

लोकेश ने कहा, ''लिंगा जो भी कह रहे हैं वह सही है।'' ''यह समुद्रतट पर हुआ था। मुझे याद है की मेरे दादाजी ने शिकारियों को सख्ती से धिक्कारा था।''

''हां,'' साबित्री और जोड़ते हुए कहा, ''मेरी मां का कहना है की शिकारियों को गिरफ्तार किया गया है और उन्हें दंडित किया गया है।''

सभी छात्र सहमत थे की एक निर्दोष जानवर और द्वीपों के राज्यप्राणी की हत्या एक जघन्य कृत्य था।

राजन महोदय ने कहा ''आपने जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना विकसित की है, लेकिन यह स्वयंपर्याप्त नहीं है,'' ''यह हर व्यक्ति जो किसी ना किसी तरह से समुद्र से जुड़ा हुआ है उन तक फैलाना जरुरी है। यह निर्दयी प्रथा प्राचीन काल से जारी है, और वास्तव में, कई लोगों की आजीविका है!''

जब यह चर्चा चल रही थी, उसे समय स्कूल के प्रधानचार्य सभाग्रह में आये। वह अपने छात्रों और उन की भागीदारी से प्रभावित हुए और छात्रों की खुशी से उनकी प्रशंसा की।

अगले दिन समापन समारोह जिसमे बच्चों को कार्यशाला के माध्यम से चार दिनों में जो किया था उसे प्रस्तुत करने का मौका मिलेगा और गैरसरकारी संगठन को सम्मानित किया जाएगा। बच्चोंद्वारा खींचा गया पोस्टर प्रदर्शित किया गया और एक विशाल बैनर लगाया गया। शिक्षकों सहित सभीने कार्यक्रम के लिए निर्धारित मदद की, मुख्य अतिथि हॅवलॉक के सहायक वन संरक्षक थे। उनके साथ ग्रामपंचायत के प्रमुख, पंचायत समिति के सदस्य, जिलापरिषद और भाग लेने वाले छात्रों के मातापिता थे। पाठशाला में उत्साह का स्तर सरस्वती पूजा के दिन जैसा था।

लिंगा मंचपर चित्रपट के पीछे खड़ा था। उसका दिमाग डुगाँन्ग के शव और उस के दोस्त की चित्रों की ओर जा रहा था।

कृष्णा ने लिंगा को तेजी से परोक्ष दबाव डालते हुए कहा ''आप वहां अकेले खड़े हो के क्या सोच रहे हैं ? ज्यादा समय नहीं है, चलो एक बार लिपि देख लेते है"।

अपने सपनो से बाहर निकल के लिंगा अपने चारो और देखने लगा। उसके दोस्तों ने अपना मेकअप समाप्त कर दिया है और प्रदर्शन के लिए तैयार है। वह थोड़ा घबराया हुआ था, क्योंकी उसने पहले कभी पाठशाला के किसी भी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया था, एक विषम कविता पाठ के अलावा।

''घबराओ मत, बस आगे देखो और तुम ठीक हो जाओगे'' कृष्णा ने कहा। लिंगा ने अपना सिर हिलाया,

लेकिन सीधे आगे की ओर देखा, जैसे की एक मोहावस्था में था।

हमारी तीन दिवसीय कार्यशाला कार्यक्रम को सार्थक बनाने के लिए गतिविधियों से भरी हुई थी और

निश्चित रूप से, मस्ती से भरी हुई थी। हमने बच्चों और उनके शिक्षकों के वृत्त चित्रों को दिखाया, छात्रों को मछुवारों और अन्य लोगों के साथ बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जो सीधे समुद्र से जुड़े हुए हैं, और पोस्टर बनाने की गतिविधिया भी थीं, ताकी छात्र अंडमान के आसपास के समुद्रों में समुद्री जीवन के बारे में जागरूकता फैला सकें। आज के कार्यक्रम का उद्देश्य यह साझा करना है की छात्र समुद्री जीवों के महत्व की सराहना करे और समझने में सक्षम हो पाए, जिससे आप सभी, उन के माता–पिता और दादा दादी के बीच जागरूकता पैदा होगी। माध्यमिक और मध्य खंड के लगभग ५० छात्र आपके लिए एक प्रहसन प्रस्तुत करेंगे, और मुझे आशा है की आप इसे पसंद करेंगे " विनीता महोदया ने कहा।

बच्चों ने समुद्र के रंगीन प्राणियों के रूप में कपड़े पहने थे। वह जेलिफिश, ऑक्टोपस, समुद्री घोड़ा और टूना मछली बने थे। उन्होंने एकसाथ गायाः

"नीले आकाश के तले, नीला पानी हमारा घर है।

हम गाते हैं और मुस्कुराते हैं जब हम चलते हैं

जब हम बड़ी मछली देखते हैं, तो हम मूंगे के नीचे छिप जाते हैं!''

उन्होंने अधिक गाने गाए, जिससे वह मंच पर मछली का एक आनंदोत्सव बना। फिर डुगाँन्ग ने प्रवेश किया, और मछली और डुगाँन्ग ने खाद्य श्रृंखला में डुगाँन्ग के महत्व के बारे में एक गीत गाया। मछली ने गाया–

"डुगाँन्ग, डुगाँन्ग वास्तव में अच्छा है

एक मां की तरह प्यार करता है

कभी किसी का पीछा नहीं करता

दूसरों को पोषण देता है"

डुगाँन्ग ने गाया–

"मैं तुम्हें एक चेतावनी देता हू

लालची नाविक और अवैध शिकारी समुद्र में नौकायन कर रहे हैं''

गीत समाप्त होने के बाद, तीन शिकारियों ने मंचपर प्रवेश किया, और कहा की डुगाँन्ग को कैसे मारना है!

कल, मैंने यहा एक पानी का सुवर देखा, वहा नाव को रोक दिया, और कोई शोर नहीं किया। जिस क्षण यह सतह पर आता है हमें भाला फेंकना होगा!'' एक ने कहा।

आप सही कह रहे हैं मदन, दूसरे शिकारी ने कहा, मैंने भी इसे इस क्षेत्र के आसपास देखा है। इसमें बहुत चरबी है ... हमें बहुत सारा तेल मिलेगा..''

शिकारियों ने अपने भाले उठाए, और जैसे ही वे उन्हें फेंकने जा रहे थे, डुगाँन्ग भगवान कृष्ण में बदल गए। तब लिंगा ने श्रोताओं को कल्पित कथा सुनाया, जहां द्वारका में भगवान कृष्ण ने अपनी गायों को सुरक्षित रखने के लिए अपनी हर एक गाय को समुद्री गायों (डुगाँन्ग) में बदल दिया। शिकारी भगवान से माफी की भीख मांगते हुए तुरंत निकल जाते हैं।

अचानक, लिंगा खड़े हो गए, और दर्शकों की ओर सीधे देखा, उनकी आवाज में पहले से कहीं ज्यादा आत्मविश्वास झलक रहा था। उसने उन्हें बताया की कैसे शिकारी द्वीपों के राज्य प्राणी का शिकार कर रहे थे, और इस अवैध गति विधि को कैसे रोका जाना चाहिए, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए और डुगाँन्ग विलुप्त हो जाए। इस कथानक में ये सब कुछ भी नहीं था, लिंगा ने जो कुछ भी कहा, वह उसने अपने दिल से कहा। जब ये सब खतम हुआ तो दर्शक निशब्द हो गये। फिर, जैसा की अभिनेता धनुष लेने के लिए मंच पर इकट्ठे हुए, वे तालियों की गड़गड़ाहट से फूट पड़े।

कार्यक्रम के बाद, लिंगा को उसके भाषण के लिए एक विशेष सम्मान मिला। उसके भाषण की प्रशंसा सहायक संरक्षक ने की। राजन सर ने अपने दोस्तों से पूछा कि उन्होंने डुगाँन्ग का जिक्र क्यों किया? उनके दोस्तों ने कहा की डुगाँन्ग से उनकी दोस्ती थी, उनके लिए डुगाँन्ग खास था। दर्शकों में बैठे, लिंगा के माता पिता अपनी खुशी को छिपा नहीं सके। उन्हें अपने बेटे पर इतना गर्व महसूस हुआ की उनकी आखें भर आयी।

अगले दिन, अपने पुरस्कार को हाथ पकड़कर लिंगा समुद्रतट पर चला गया और समुद्र की ओर देखते हुए उसके दोस्त में डुगाँन्ग को जो समुद्र में रहता है उसको एक मौन वादा किया –'' मेरे दोस्त आपको डरने की कोई जरूरत नहीं है, क्यों कि हम आपकी रक्षा के लिए होंगे। और हमारे साथ इतने सारे लोग हैं जो अनंत कालतक आपकी रक्षा करेंगे। मेरे दोस्त शांति से रहो।''

डुगाँन्ग, मेरा दोस्त

एल्रीका डी'सुजा

बचपन से ही मुझे जलपारियों की कथायें मंत्रमुग्ध करती रही हैं। बचपन की दहलीज पार करने के साथ ही मैं इन कथाओं से जुड़ी हुई डुगाँन्ग (समुद्री गायों) के साथ तैरने की कल्पना करने लगी।

वर्ष २००७ में मुझे इन शानदार समुद्री जीवों को देखने और घंटों तक उनके साथ स्नौर्कलिंग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शुरू में रिचीज द्वीपसमूह में हॅवलाक टापू के उथले हुये जलस्तर में ३००-४०० किलोग्राम वजन के छः फीट लम्बे प्राणी को देखना भयावह अनुभव था। शीघ्र ही इस सौम्य और शान्त प्राणी की खाद्य आदतों के बारे में जानकर हमारा भय दूर हुआ और हमने इस डुगाँन्ग का नाम अल्फा रखा। इस जीव के साथ तीन महीने से अधिक दिनों तक करीब छः घण्टे प्रतिदिन तैरने से हमारी आशंका दूर हो गई और नई जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

डुगाँन्ग अंडमान नीकोबार द्वीपसमूह में रहने वाले विशिष्ट और शानदार समुद्री स्तनपाइयों में से एक है। ऐसे जीव को देख पाना दुलर्भ है जो पांच–सात मिनटों में सांस लेने हेतु कुछ पलों के लिए ही सतह पर आता है। द्वीपसमूह के जल की न्यूनदृष्यता के कारण इसे देख पाना और भी कठिन हो जाता है। द्वीपसमूह में इसकी उपस्थिति निश्चित करने के लिए हमने वैकिल्पक तकनीकों का सहारा लिया, जैसे समुद्री घास मैदानों के सर्पीले रास्तों में इसके खाद्य चिन्हों का पता लगाना, जब भी हमें यह जीव दिखाई दिया, हमने इसके व्यवहार को अभिलिखित (रिर्काड) किया। इसे प्रायः अपनी दैनिक आवश्यकता पूर्ति के लिए छोटे आकार के समुद्री घास को खाते हुये देखा जा सकता हैं, जो इसका मुख्य आहार है।

आठ वर्षो तक समुद्री घास मैदानों को निगरानी कर के तथा स्थानीय समुदायों से सूचना प्राप्त करने के उपरान्त हमने पंद्रह डुगाँन्ग को आलेख किया। कुछ और डुगाँन्ग को देख पाने की संभावना अभी भी बनी हुई है। वर्षो तक किये गये अनुसंधान के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस उपमहाद्वीप में डुगाँन्ग का मुख्य आहार हैलोड्यूल तथा हैलोफिला वंश की घासें हैं, जिनमें नाइट्रोजन की मात्रा अधिक और तन्तु की

मात्रा कम होती है, जिनके लिए विस्तृत चारागाहों का होना आवश्यक है। पिछले पांच दशाब्दियों में इन चारागाहों की संख्या निश्चित रूप से कम हुई है, लेकिन जिन स्थलों में इन जीवों की मृत्यता हुई है उन्हें छोड़कर, अन्य स्थलों में ये जीव उन्हीं समुद्री घास के मैदानों का उपयोग करते आ रहे हैं। इन क्षेत्रों में यह जीव पूरे वर्ष निरंतर रूप से उसी चारे का प्रयोग करते हैं।

डुगाँन्ग समुद्री घास पारिपद्धति के बागवां हैं। इनके द्वारा की गई निरंतर चराई के कारण समुद्री घास में पोषकतत्वों की मात्रा बढ़ती है और चारागाहों की वे घास प्रजातियां अनुरक्षित रहती हैं जो अन्य सभी आश्रित जीवों के लिए आवश्यक हैं। यदि डुगाँन्ग विलुप्त हो गया तो पारिपद्धति पर पड़ने वाले दुश्प्रभाव के बारे में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन हम इतना जानते हैं की पारिपद्धति में प्रत्येक जीव की कोई न कोई भूमिका अवश्य होती है जिसे हम पूरी तरह से समझ नहीं पाये हों। डुगाँन्ग की भूमिका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के लिए लाभदायी हो सकती है या नहीं भी हो सकती, लेकिन इतना तो निश्चित है कि इसकी भूमिका, पारिपद्धति के अन्य छोटे जीवों के लिए अवश्य लाभदायी होगी। किसी प्रजाति के विलुप्त होने पर पछताने की बजाय समय रहते उस प्रजाति का संरक्षण करना आवश्यक है।

एल्रीका डी'सुजा, प्रकृति संरक्षण संस्थान, (Nature conservation foundation - NCF) मैसूर मे एक अनुसंधान साथी (रिसर्च असोसिएट) हैं। उनका समूह पिछले बारह वर्षों से अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में डुगाँन्ग की अभावों का अध्ययन कर रहा है। पोर्टब्लेयर पर्यावरण और वनविभाग के साथ मिलकर वे द्वीपसमूह में डुगाँन्ग कि शेष आबादी और उसके वासस्थलों की निगरानी और रक्षण करने के उपायों को विकसित करने का कार्य कर रहें हैं।

शब्दकोष

मूंगा चट्टान (कोरल)

समुद्री चट्टान से जुड़ा एक साधारण जानवर जो कई लोगों को उसके दिखावट के कारण पौधे या चट्टानो जैसा लगता है। ये जानवर मूंगा – चट्टान के निर्माण के लिए जिम्मेदार हैं। वे सैकड़ों हजारों अन्य प्रजातियों के लिए घरों और रहने की जगह (आवास) प्रदान करते हैं जो मूंगा – चट्टान पारिस्थिति की प्रणालियों में रहते हैं। मूंगा (कोरल) केवल उन पानी में ही जीवित रह सकते हैं जिनमें एक विशेषता पमान सीमा होती है। यदि पानी बहुत अधिक गर्म हो जाता है, तो मूंगे जीवित नहीं रह सकते।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के मूंगा (कोरल)

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के आसपास पानी में मूंगों की ३०० से अधिक प्रजातिया पाई जाती हैं। स्नोर्केलिंग या स्कूबा डाइविंग (गोता लगाने) के दौरान और हॅवलॉक पर जेटी पर चलते हुए भी इन्हें देखा जा सकता है।

डॉल्फिन

डॉल्फिन एक समुद्री स्तनधारी प्राणी है। वे ज्यादा तर मछली और स्क्विड (समुन्द्रफेनी) खाते है, और उन्हें अत्यधिक बुद्धिमान प्राणी माना जाता है। वे निहायत सामाजिक भी है।

पारिस्थितिकी (परिस्थितिविज्ञान)

यह विज्ञान की एक शाखा है जो जीवों और उनके पर्यावरण के बीच पर स्परक्रिया और संबंधों से संबंधित है।

पारिस्थितिकतंत्र

एक ही वातावरण में एक साथ मौजूद जीवित और निर्जीव चीजों के विभिन्न रूपों के साथ परस्पर क्रिया एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है।

खाद्यश्रृंखला

उत्पादकों और उपभोक्ताओं द्वारा खाने और खाने की श्रृंखला के माध्यम से बनाई गई कड़ी है। आपस में जुड़े खाद्य श्रृंखला भोजनचक्र (फूडवेब्स) बनाते हैं।

मन्नार की खाड़ी

मन्नार की खाड़ी हिंद महासागर में एक बड़ी उथली खाड़ी है। यह वनस्पतियों और जीवों की ३,६०० से अधिक प्रजातियों को पोषित करने के लिए जाना जाता है, जो इसे एशिया के सबसे बहुमूल्य तटीय क्षेत्रों में से एक

बनाता है। मन्नार की खाड़ी में ११७ कठोर मूंगा की प्रजातियां दर्ज की गई हैं। शार्क, डुगॉन्ग और डॉल्फिन की तरह समुद्री कछुवे भी खाड़ी में लगातार आते है।

कच्छ की खाड़ी

कच्छ की खाड़ी गुजरात राज्य में भारत के पश्चिमी तट के साथ अरब सागर का एक प्रवेशद्वार है। यह ज्वारीय ऊर्जा उत्पादन की उच्चतम क्षमतावाला क्षेत्र है। भारत का पहला समुद्री राष्ट्रीय उद्यान गुजरात के जामनगर जिले में कच्छ की खाड़ी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है।

पर्यावास

जहाँ एक जीव रहता है। यह जीव को आश्रय, भोजन और पानी की आपूर्ति करता है। डुगॉन्ग का निवास स्थान (पर्यावास) समुद्र है।

जेलिफिश

जेलिफिश समुद्र में रहते हैं और सभी महासागरों में पाए जाते हैं और कुछ मीठा पानी में रहते हैं। वे अक्सर पारदर्शी या पारभासी हो सकते हैं, जिसमें छतरी के आकार की बेल और अनुगामी स्पर्शसूत्र/लतातंतु शामिल होते हैं। इन स्पर्शसूत्र/लतातंतु में चुभनेवाली कोशिकाएँ होती हैं, इसलिए जब आप जेलीफिश देखें तो सावधान रहें जेलिफिश प्लवक (प्लैंकटन) खाते हैं। कुछ समुद्री कछुवे जेलिफिश खाते हैं।

लॉन्ग द्वीप

दक्षिण अंडमान में भी, इस छोटे से द्वीप में खूबसूरत समुद्रतट और साफ पानी है। संकीर्ण कंक्रीट फुटपाथों के साथ एक छोटा सा गाव है। अंडमान द्वीप समूह में सबसे रमणीय समुद्रतटों में से एक, लॉन्ग द्वीप में स्थित लालाजी खाड़ी है। लॉन्ग द्वीप के आसपास स्कूबा गोताखोरी उत्कृष्ट है।

मकरसंक्रांती

यह त्योहार उस दिन को निशानित करता है जब सूर्य अपनी उत्तर की ओर यात्रा शुरू करता है और कर्क रेखा से मकर रेखा में प्रवेश करता है। इस त्योहार को अन्य नामों में पोंगल, लोहड़ी, उत्तरायण, माघी, भोगली बिहू और पौष पारबोन शामिल हैं।

नील द्वीप

दक्षिण अंडमान में से यानी नीलद्वीप १८ वर्ग किमी के क्षेत्र में बसा है। जाहिरा तौर पर इस का नाम ब्रिटिश सैनिक जेम्स जॉर्ज स्मिथनील के नाम पर रखा गया है। कृषि ग्रामीणों का प्राथमिक व्यवसाय है। हालांकी, अब, पर्यटकों की बढ़ती संख्या नीलद्वीप की यात्रा करना चुनती है।

ऑक्टोपस

इन जानवरों में आठ स्पर्शसूत्र/लता तंतु होते हैं। वे अपने शिकार को विचलित करने के लिए एक काली स्याही निकालते हैं और माना जाता है की वे बहुत बुद्धिमान हैं।

राधानगर समुद्रतट

यह हॅवलॉक के घाट से १२ किमी दूर स्थित है। ये समुद्रतट निस्संदेह अंडमान द्वीप समूह के सर्व श्रेष्ठ समुद्रतटों में से एक है। इसकी कुल लंबाई २ किमी और चौड़ाई ३०–४० मीटर है। टाइम पत्रिका द्वारा राधानगर समुद्रतट को ''एशिया के सर्वश्रेष्ठ समुद्रतट'' में से एक के रूप में सम्मानित किया गया है।

समुद्री घास

समुद्री घास फूलवाले पौधे की तरह घास होती है जो पूरी तरह से समुद्री और मुहाना जल में जलमग्न रहते हैं। वेडगोंग और ग्रीन कछुए के मुख्य आहार हैं और कई छोटे जानवरों के लिए एक निवास स्थान प्रदान करते हैं। वे पानी को साफ रखने में भी मदद करते हैं।

स्ट्रेट द्वीप

स्ट्रेट द्वीप बाराटांग द्वीप के पूर्व में स्थित एक छोटा, अल्पविराम के आकार वनाच्छादित द्वीप है। यहां महत अंडमानी लोगों की आबादी है, जो अंडमान द्वीप समूह के देसज लोगों में से एक है। यहां बच्चों के लिए प्राथमिक विद्यालय और छोटासा प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल के लिए औषधालय भी है।

टाइगर झींगा

टाइगर झींगा एक समुद्री परूषकवची जीव है जिसे भोजन के लिए व्यापक रूप से पाला जाता है। वे आमतौर पर ज्वारमुख (नदीमुख), (किशोर), समुद्री (वयस्क), खलीज और आम्रकुंज (मैंग्रोव), नीचे की और रेत में बसे हुए पाए जाते हैं। टाइगर झींगे का डिंभक (लार्वा) तट की ओर बढ़ता है, जो ज्वारमुख और मैंग्रोव दलदल में प्रवेश करता है जो शिशुसदन के रूप में काम करता है। वे तब गहरे पानी में चले जाते हैं जब वे किशोर हो जाते हैं।

टयुना मछली

वे सबसे अधिक व्यावसायिक रूप से मुल्यवान मछली हैं। यह विटामिन बी–६ और फास्फोरस का अच्छा स्रोत है और प्रोटीन, नियासिन और कम संतृप्त चरबी का बहुत अच्छा स्रोत है। वे पानी के माध्यम से महान गति से आगे बढ़ सकते हैं।

मैंग्रोव (आम्रकुंज)

मैंग्रोव एक प्रकार की दुर्लभ वनस्पतियों का सग्रह है जो खारे पानी को सहन कर सकती है और समुद्री पानी में आंशिक रूप में जलप्लावित होने पर भी फलने–फूलने की क्षमता रखती है।

लेखक की जीवनचरित

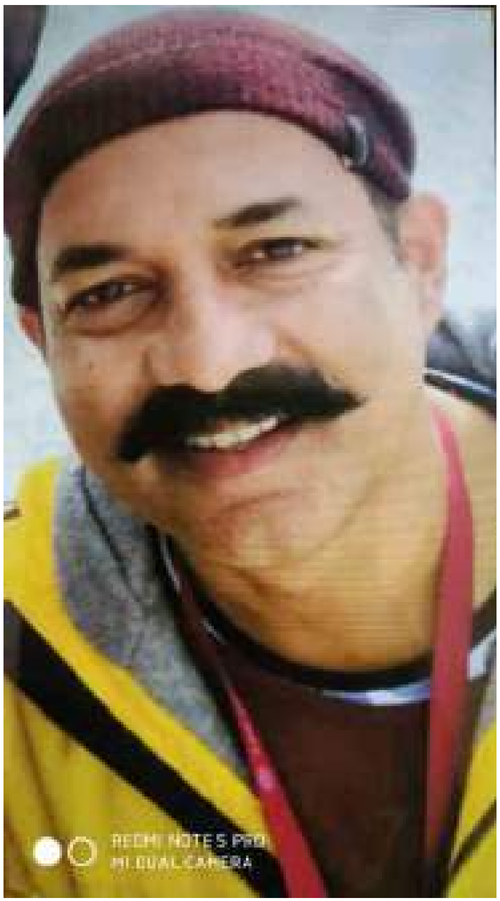

राष्ट्रीय पुरस्कार तथा एयर इंडिया बोल्ट (ब्रॉड आउटलुक फॉर लर्नर टीचर) पुरुस्कार से सम्मानित अध्यापक चंचल सिंह रॉय, दो दशकों से भी ज्यादा समय से अंडमान द्वीपों में काम कर रहे हैं।

अपने इस अवसर का उपयोग इन्होंने प्रकृति के बीच में रहकर तथा इससे अधिक उपयोगी बनाने के लिये किया है।

प्रकृति के लिए उत्साह से ओतप्रोत, इन्होंने अपने स्वंयसेवक क्रार्यक्रम से बच्चों तथा तटीय समुदाय के लोगों को जागरूक तथा शिक्षित करने की पहल की है।

हाल ही में इनके मार्गदर्शन में इनके विद्यालय के शिक्षार्थियों ने ''नेशनल विप्रो अर्थियन पुरस्कार २०१८'' जीता है।

लिंगाराजु प्रतिदिन समुद्रतट पर जाता था। उसे समुद्र, मूंगा और उसके आसपास देखे गए सभी जानवर पसंद थे। सब कुछ उसे पता था ... एक दिन जब तक वह एक अजीब प्राणी के साथ आमने–सामने आया ... डुगाँन्ग

चंचल सिंघा रॉय पिछले २३ वर्षों से दक्षिण और उत्तर अंडमान के ग्रामीण क्षेत्रों में एक शिक्षक हैं और वे अपनी पहल 'कोस्टल ग्रीन झोन' के साथ युवा छात्रों के बीच जागरूकता फैलाने का काम करते हैं और उन्हें २००७ में एयर इंडिया बोल्ट (ब्रॉड आउटलुक फॉर लर्नर टीचर) पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सुमिता सेनगुप्ता के पास शैक्षिक मनोविज्ञान और इतिहास में उन्नत डिग्री है और उनके पास तीस साल का शिक्षण अनुभव है। उसे यात्रा करने और पढ़ने में आनंद आता है।

चित्रकला और कई पुरस्कारों की विजेता में एक युवा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति धारक बिदिशा चोक्रोबोर्ती ने अभी कोलकाता के गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट से फाइन आर्ट्स में अपनी पढ़ाई शुरू की है।